Total Pages : 8

3641/R

B.A. (Third Year) Examination, 2016

SANSKRIT

Paper–I

(वैदिक व लौकिक काव्य एवं गद्य)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).
Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।
प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इकाई-I

(क) विष्णु सूक्त के देवता 8वं ऋषि का नाम लिखिए।

(ख) ''कस्मै देवाय हविषा विधेम।'' में किस देवता की हवि के द्वारा पूजन की बात कही गयी है?

इकाई-II

(ग) ''मृत्यवे त्वा ददामि।'' किसने किसको कहा?

(घ) श्रेय एवं प्रेय मार्ग में संक्षेप में अन्तर बताइये।

इकाई-III

(ङ) वनेचर कौनसे वन में युधिष्ठिर से मिला?

(च) 'किरातार्जुनीयम्' के लेखक का नाम बताइये। 'किरात' शब्द का अर्थ भी बताइये।

इकाई-IV

(छ) राजसिंहासन पर बैठा हुआ भी दुर्योधन वनवासी युधिष्ठिर से क्यों डरता था?

(ज) पाँच पाण्डवों के नाम बताइये।

इकाई-V

(झ) "शुकनास" किसका मंत्री था? शुकनासोपदेश में किसने किसको उपदेश दिया?

(ञ) गुरु का उपदेश दुर्जन एवं सज्जन के लिए कैसा होता है?

खण्ड-ब

इकाई-I

2. निम्न मंत्रों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(अ) तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।

उरूक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः।।

अथवा

(ब) सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्।।

इकाई-II

3. निम्न में से किसी एक मंत्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(अ) न वित्तेनतर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।

जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरक्तु में वरणीयः स एव।।

अथवा

(ब) तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्।

अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति।।

इकाई-III

4. अधोलिखित श्लोकों में से किसी एक ही सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(अ) क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।

अतोअर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।

अथवा

(ब) विहाय शान्ति नृप धाम तत्पुनः प्रसीद सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।

व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहा शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।।

इकाई-IV

5. निम्न श्लोकों में से किसी एक श्लोक की संस्कृत में सप्रसंग व्याख्या करिए:

(अ) व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।

प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः।।

अथवा

(ब) प्रलीनभूपालमणि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।

स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो दुरुता बलवद्विरोधिता।।

इकाई-V

6. निम्न गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(अ) गुरुपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलेप्रक्षालनक्षमम् अजलं स्नानम्, अनुपजातपलितादिवैरूप्यमजरं वृद्धत्वम् अनारोपित-मेदोदोषं गुरुकरणम्, असुवर्णविरचितम् अग्राम्यं करणाभरणम् अतीतज्योतिरालोकः नोद्वेगकरः प्रजागरः।

अथवा

(ब) न हि तं पश्यामि यो ह्यपरिचितयानया न निर्भरमुपगूढ: यो वा न विप्रलब्ध:। नियतमियमालेख्यगतापि चलति। पुस्तमय्यपीन्द्रजालमाचरति। उत्कीर्णापि विप्रलभते। श्रुताप्यभिसन्धते। चिन्तितापिवञ्चयति। एवंविधयापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीता विक्लवा भवन्ति राजान: सर्वाविनयाधिष्ठानताञ्च गच्छति।

खण्ड-स

इकाई-I

7. 'इन्द्र' देवता का स्वरूप लिखिए।

इकाई-II

8. 'कठोपनिषद्' के आधार पर आत्मा का स्वरूप लिखिए।

इकाई-III

9. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग का सार लिखिए।

इकाई-IV

10. महाकवि भारवि की भाषा-शैली पर लेख लिखिए।

इकाई-V

11. शुकनासोपदेश के आधार पर लक्ष्मी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।